© 2025 IJNRD | Volume 10, Issue 5 May 2025 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184

INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाबरनामा में वर्णित भारतीय समाज एवं संस्कृति का आलोचनात्मक अध्ययन

Dr. Chander Shekhar
Associate Professor
History Deparetment
Singhania University (Raj)

Paramjeet Singh (Researcher)
History Department
Singhania University
Pancheri Bari (Raj)

जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर का इतिहास में स्थायी स्थान उसकी भारतीय विजयों पर टिका है जिसने एक शाही रेखा के लिए रास्ता खोल दियाय लेकिन उसके संस्मरणों से इतिहास में उसका स्थान अद्वितीय हो जाता है। हम सोलहवीं शताब्दी के शुरूआत में देश और उसके लोगों के बारे में अपने ज्ञान के लिए बहुत अधिक ऋणी है । तुजुक.ए.बाबरी में बाबर द्वारा वर्णित अपने अभियानों के साथ.साथ उसके आक्रमणों की पूर्व संध्या पर भारत की सामाजिक.सांस्कृतिक स्थिति का काफी सटीक वर्णन देखने को मिलता है। हालांकि 1509.1519ए 1520.1525 और 1529.1530 वर्षों का लेखा जोखा पुरी तरह से गायब हैए यह मुहर्रम 3ए 936؛ ;7 सितंबर 1529द्ध के बाद अचानक समाप्त हो जाता है । बाबर के इस अधूरे वर्णन के अनेक कारण बताये गये है परंतु उसके उल्लेखों से इस संबंध में बहुत कम जानकारी मिल पाई है। हो सकता है कि उसने जिन दिनों का वर्णन नहीं किया है उसको वह महत्त्वपूर्ण ही नहीं समझता हो या परिस्थितियों के कारण वह लगातार और सिलसिलेवार घटनाओं को न लिख सका हो या जिंदगी ही भागदौड़ में कुछ पन्ने नष्ट हो गए हों । मध्यकालीन युग के अन्य लेखकों के विपरीतए वह लम्बा परिचय न देते हुएए सीधे विषय पर जाता है। उसके संस्मरण न केवल मध्य एशियाए भारत और उसके अपने प्रभुत्व के राजनीतिक और सैन्य इतिहास पर प्रकाश की बाढ़ लाते हैं बल्कि वे बाबर को ऐसे रूप में प्रस्तुत करते हैं जो प्रकृति में गहरी दिलचस्पी रखता हो और ध्यान देने योग्य दिलचस्प किसी भी चीज की आलोचनात्मक रूप से जांच करने की जन्मजात क्षमता रखता हो।

बेवरिज ने आत्मकथा का मूल्यांकन करते हुए लिखा है कि ष्बाबर की आत्मकथा एक अनमोल ग्रंथ है जिसकी तुलना संत अगस्टाइन और रूसों के स्वीकृति पत्रों ;ब्वदमिेपवदेद्ध तथा गिब्बन और न्यूटन की आत्मकथाओं से की जा सकती है।[1] उसने कहीं पर भी स्वयं इतिहासकार होने का दावा नहीं कियाए परंतु फिर भी आज यह मान्यता है कि प्राच्य ;ैंजमतदद्ध आत्मकथाओं में बाबरनामा निश्चय ही उच्च कोटि की रचना है जिसके आधार पर बाबर को आत्मकथा लेखकों का शिरोमणि माना जा सकता है।[2]

1. आर के सक्सेना व एल० पी० माथुरए मुगलकालीन इतिहासकार व इतिहासलेखनए पब्लिकेशन स्कीमए उदयपुरए 2001ए पृ० 14ण
2. एच बेवरांजए कलकत्ता रिव्यूए 1897ण

बाबर का हिन्दुस्तान का विवरण इतना संजीव है कि पाठक ऐसा अनुभव करने लगता है कि स्वयं बाबर के साथ ही साँस ले रहा है। तुजुक.ए.बाबरी ;बाबरनामाद्ध मोटे तौर पर काबुलए समरकन्द और हिन्दुस्तान तीन खण्डों में विभाजित है। हिन्दुस्तान का उसका वृत्तान्त पूरे संस्मरण के एक तिहाई हिस्से से कम नहीं है। इस खण्ड में वह न केवल जनसंख्याए राजस्व और विभाजनए महत्त्वपूर्ण शासकए प्रौद्योगिकीए जलवायु के अलावा रीति.रिवाजोंए रहन.सहनए धार्मिक पद्धतिए खान.पानए आवास का वर्णन भी करता है । जिसे हमें तत्कालीन समय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक लक्षणों को गहराई से समझने में काफी सहायता मिलती है । बाबर वर्णित करता है कि हिन्दुस्तान में कुछ परम्पराएं या काम करने के तरीके एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौप दिये गए है इनका दो स्तरों पर पालन किया जाता है । एक घरेलू स्तर पर यानी घर को सीमा के भीतर और दूसरा सामुदायिक स्तर पर । त्योहारों का उत्सव चाहे वह धार्मिक महत्त्व का हो या किसी विशेष क्षेत्र के लिए अन्य महत्त्व का होए सामुदायिक स्तर के रीति.रिवाजों और परम्परा की श्रेणी में रखा जा सकता है।[3] उसने किसी भी धार्मिक प्रथा का उल्लेख नहीं किया हैए लेकिन वह कुछ भारतीय रीति.रिवाजों का आलोचक प्रतीक होता है । जिन्होंने उसका ध्यान आकर्षित किया। बाबर की टिप्पणियां दिलचस्प हैए हालांकि कई मामलों में असंतोष जनक भी है बाबर द्वारा वर्णित भारतीय रीति.रिवाजों में से एक सिंहासन और सम्पत्ति का उत्तराधिकार था । वह बंगाल में उत्तराधिकार समस्या के बारे में लिखता है।[4]

पोशाक के बारे में बाबर उल्लेख करता है कि हिन्दुस्तान के विभिन्न सामाजिक और धार्मिक समूहों में एकरूपता नहीं है। लेकिन किसानों और निम्न वर्गों के बीच एक निश्चित एकरूपता थी। बाबर लिखता है कि अधिकतर हिन्दुस्तानी पुरुष लगुटा ;पारम्परिक भारतीय अंडरगारमेंटद्ध विशेषकर निम्न वर्ग के लोग पूरे वर्षों में लगुटा पहनते थे और धड़ को ढकने के लिए कोई अन्य वस्त्र इस्तेमाल नहीं करते थे। इसी तरह वह महिलाओं द्वारा रेफरी ;साड़ीद्ध पहने जाने वाले वस्त्र का उल्लेख करता है।[5] लगोटी या तौलिया के लिए वह श्फेफडाश फारसी शब्द उपयोग करता है। हालांकिए बाबर द्वारा वर्णित भारतीय कपड़ों की शैली में भिन्नताओं पर किसी का ध्यान नहीं गया था। क्योंकि बाबर के आक्रमण के समय गर्मी का मौसम था यहां कि गर्मी के अनुसार कम कपड़े पहने जाते थे। बाबर के पोशाक विवरण को बड़ी सतर्कता से पढ़ने की जरूरत है। वास्तव में भारतीय निम्न वर्ग के पुरुष और महिलाएं विभिन्न प्रकार के कपड़ों का इस्तेमाल करते थे। क्योंकि निम्न वर्ग के पुरुषों को खेतों में काम करना था और लम्बे समय तक अपने कपड़ों का उपयोग करते थे।

खाने की आदत और खान.पान का तरीका भी किसी क्षेत्र या समाज की सांस्कृतिक विशेषताओं का अभिन्न अंग है। बाबर ने हिन्दुस्तान में खाने की आदत के बारे जो देखा उसका विवरण अपने संस्मरण में करते हुए कहता हैए

3. सतीश चन्द्रए मेडिकल इण्डिया फ्रोम सल्तनत टू मुगल्सए जवाहर पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स भाग.2ए नई दिल्लीए पृ० 45ण
4. बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 204ण
5. बाबरनामाए वहीए पृ० 183

किए हिन्दुस्तानी बाजारों में पका हुआ खाना और अच्छी रोटी नहीं मिलती है।[6] वह हिन्दुस्तान के फलों में आम को सर्वोत्तम मानता है । आम के फल को हिन्दुस्तानी श्नगज़कश कहते हैं। अमीर खुसरों ने कहा किए ष्बागों को अनोखापन देने वाला हिन्दुस्तान का नगज़क है ।ष्[7] वह खुशबूदार होता हैए बहुत खाया जाता है। वह इमली को हिन्दुस्तान का छुहारा कहता हैए वह यह भी बताता है कि इमली को हिन्दुस्तानी शहिन्दी खुरमाश कहते है । वह बेर जिसे श्फारसीश में श्कुनारश कहते हैए का थोड़ा नकारात्मक वर्णन करता है। बेर भी कई तरह के होते थे । हो सकता हैए बाबर ने जंगली बेर के हिसाब से वर्णन किया हो । वह कहता हैए केला एक अन्य हिन्दुस्तानी फल है जिसने मुझे को आकर्षित किया । वह कटहल का एक दिलचस्प विवरण देते हुए लिखता है किए यह एक भेड के पेट की तरह होता है जो अन्दर से रेशेदार होता है और बाहर से पत्थर की तरह होता है । कटहल बहुत चिपकाने वाला होता था इसलिए इसको खाने से पहले मुंह और हाथों में तेल लगाते थे । वह खजूर.ताड़ के पेड़ों से ताड़ी निकालने की विधि का भी वर्णन करता है। वह कहता है कि उसने खजूर ताडी का स्वाद भी चखाए लेकिन उसे वह उत्साहवर्धक नहीं लगा।ष्[8]

बाबर प्रकृति प्रेमी था । उसने अपनी रचना में यहां के पशु.पक्षियों में हाथीए गेंडाए जंगली भैसाए नील गायए मृगों के उल्लेख के साथ बन्दरए गिलहरी की भी चर्चा की है। हिन्दुस्तान में वह पशुओं और पक्षियों के मांस के स्वाद के बारे में भी लिखता है। मोर का विशद विवरण देते हुए वह उल्लेख करता है। इसका मांस चार इस्लामी न्यायविदों में से एक इमाम और अबू हनीफा के अनुसार वैध भोजन है व्यापक रूप से मुसलमानों द्वारा इसका पालन किया जाता है। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि मोर का मांस भारतीय मुसलमानों और अन्य लोगों के आहार का नियमित हिस्सा है क्योंकि अगली पंक्ति में वह लिखता है कि ऊंट का मांस को घृणा से खाया जाता था हिन्दुस्तान के पशुओं में वह हाथी को सर्वोत्तम मानता है। हिन्दुस्तान के जंगली जानवरों में से एक पील है। जिसे वे हिन्दुस्तानी हाथी कहते है यह कालपी की सरहदों में रहता है। वहां से पूर्व की तरफ जायें तो जंगली हाथी अधिक मिलते है। हाथी बडे डील.डौल का जानवर है। हाथी का खाना.पीना सब सूंड से होता है। उसके दो दांत होते है। दीवार और दरवाजों को इन्ही दांतों से जोर लगाकर गिरा देता है । हिन्दुस्तानियों को इन्हीं दांतों की बड़ी कद्र है ।[10]

6. बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 199
7. के० एम० अशरफए हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन एवं परिस्थितियांए जवाहर पब्लिकेशनए नई दिल्लीए 2001ए पृ० 164
8. बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 201
9. वहीए पृ० 126ण
10. बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 403

वह एक अन्य जानवर गैडे के बारे में लिखता है । इसका डील. डौल वाले भैसा के बराबर होता है । तुर्किस्तान में यह बात मशहूर है कि गैंडा हाथी को अपने सींग पर उठा लेता हैए जो शायद गलत हो । भैस के बारे में वह लिखता है कि उसके सींग पीछे मुडे हुए होते हैं और चिपके हुए होते है । यह काफी नुकसान वाला जानवर है । इसके सींग फाड देने वाले है । बाबर का भैस का वर्णन किसी अन्य जानवर का लगता है । या हो सकता है कि वह जंगली भैस का वर्णन कर रहा होए जोकि नुकसानदेह हो सकती थी । इन छुटपुट सूचनाओं के अलावा हमें बाबर के अवलोकन के आलोक में भारतीय आहार और भोजन की आदतों की स्पष्ट तस्वीर खींचने में मदद करने वाली कोई अन्य चीज नहीं

मिलती है । जैसे कि बाबर हिन्दुस्तान के बाजारों में अच्छी रोटी और पके हुए खाने की शिकायत करता है । वास्तव में मध्य एशिया और पूर्वी देशों में बड़े घरों में नहींए बल्कि बेकरी में तैयार की जाती थी जो भारतीय परम्परा का हिस्सा नहीं था । इसलिए यह कहना सही होगा कि बाबर ने मध्य एशियाई दृष्टिकोण से भारतीय सामाजिक.सांस्कृतिक संरचना की प्रत्यक विशेषता का अवलोकन किया ।

ऐतिहासिक घटनाओं का इतिहास होने के अलावा बाबरनामा अपने आप में साहित्यिक कृति भी है। इसमें फारसी और तुर्की दोहे की संख्या काफी मिलती है । इनमें से कुछ दोहेए चाहे फारसी में हो या तुर्की मेंए स्वयं बाबर द्वारा रचित थे जबकि कुछ अन्य कवियों की रचनाएं है और उनके द्वारा संस्करण में दर्ज है। जिससे पता चलता है कि बाबर की साहित्य में गहरी रूचि थीए लेकिन आश्चर्यजनक है कि उसने भारतीय साहित्य के बारे में वह कोई उल्लेख नहीं करता हैए न ही वह किसी भारतीय साहित्य का नाम देता है। लेकिन वह भारत में कुछ अक्षरों और शब्दों के उच्चारण में कुछ दोष बताता है । मलिक हस्त नामक एक स्थानीय सरदार का उल्लेख करते हुए वह लिखता है कि उसका असली नाम श्असदंश था । लेकिन गलत ढंग से उसका उच्चारण श्हस्तश कर देते हैं[11] हालांकि बाबर अपने अवलोकन में सही था क्योंकि कुछ अनपढ़ एवं अशिक्षित लोग ही थे जो ऐसी गलतियां करते थे अकबर के समय तक उत्तर भारत में फारसी का ज्ञान इतना व्यापक हो चुका था कि उस समय फारसी के साथ.साथ स्थानीय भाषा ;हिन्दद्ध भी थी। दक्कनी राज्यों में भी स्थानीय भाषा सत्रहवीं शताब्दी में समाप्त हुई। वह स्थानीय भाषाओं में लिखने वाले सभी व्यक्तियों की भावनाओं को व्यक्त करता है यह इन भावनाओं को आत्मविश्वास और इन्हें प्राप्त हुई उच्च स्थिति को भी दर्शाता है।

बाबर के आगमन से पहले ही हिन्दुस्तान में वास्तुकला और संगीत के क्षेत्र में सांस्कृतिक गतिविधियों का विस्फोट हो चुका थाए मुगलों ने भी शानदार किलोए महलोंए दरवाजोंए मस्जिदोंए बावलियो आदि का निर्माण कराया । वास्तव में महलों और आरामगाहों में बहते पानी का उपयोग मुगलों की एक खास विशेषता थी ।ष[12] बाबर बागों का बहुत शौकीन था तथा उसने आगरा और लौहार के आसपास कुछ बाग लगवाए । लेकिन दिलचस्प बात यह है कि बाबर केवल कुछ भारतीय वास्तुकला की विशेषताओं का वर्णन करने के लिए खुद को सीमित करता है।[13] हालांकि

11. बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 126ण
12. सतीश चन्द्रए वहीए पृ० 235ण
13. बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 89ण

चन्देरी और ग्वालियर की स्थापत्य कला के बारे में बाबर काफी सटीक जानकारी देता है। चन्देरी के स्थान की प्रशंसा करते हुए वह कहता है कि यह अच्छे देश में स्थित है जिसमें चारों और पानी बहता है। परिवार में स्थित भवनों के बारे में वह लिखता है कि सभी पत्थर से बने हुए है तथा उसका फर्श मिट्टी की टायलों की बजाय पत्थरों से ढका हुआ है।ष[14]

ग्वालियर की स्थापत्य कला से बाबर बहुत प्रभावित हुआ । ग्वालियर के मन्दिरों के बारे में उसका कहना है कि वे प्राचीनकाल में बने थे । इनके चबूतरे पर चित्रों का तराशा गया है। ये मन्दिर केवल पूजा का नहींए शिक्षा का भी केन्द्र थे। वह यह भी कहता है कि मैने ग्वालियर में मानसिंह एवं विक्रमजीत के भवनों का गहराई से निरीक्षण किया है। वे अद्भुत है[15] बाबर यह भी उल्लेख करता है कि हिन्दुस्तान में कोई नियोजित शहर और उद्यान नहीं है उसका कहना है कि

भारतीय को घर बनाने की जरूरत ही नहीं है। वे घास या मिट्टी का उपयोग झोपड़ियां तथा छोटे आकार के तम्बू बनाने के लिए करते है। जो वर्षा के प्रकोप को सहन करने में असमर्थ थे। भारतीय कस्बोंए गांवों की शैली के बारे में अपने आंकलन में बाबर गलत प्रतीक होता है। मिट्टी और झोपड़ियों केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही थी। इतिहासकार रिज्क.उल मुश्तैकी कहते है किए ष्हुमायूं बंगाल की विलासिता को देखकर हक्का.बक्का रहा गया था।ष[16] इसलिए नियोजित उद्यान की अनुपस्थिति की बाबर की आलोचना वास्तविक नहीं है।

चित्रकला सांस्कृतिक जीवन का एक अन्य क्षेत्र था संस्कृत की साहित्यिक कृतियों में चित्रकला शैली का उल्लेख मिलता हैए अजंता के भीति.चित्र प्राचीन भारतीय चित्रकला परम्परा की समृद्धि के सजीव साक्ष्य है । यद्यपि आठवी सदी से इस परम्परा का पतन आरंभ हो गयाए लेकिन यह सदा के लिए मृत नहीं हुई। बाबर के भारत आगमन से पहले भारत में चित्रकला की परम्परा मौजूद थी। हालांकि सल्तनत काल की कोई मिश्रित पांडुलिपि उपलब्ध नहीं हैए किन्तु अमीर खुसरों के कथन से मालूम होता है कि शासक वर्ग के लोग चित्रकला के शौकीन होते है।ष[17] बाबर खुद एक संगीत प्रेमी था वह अपने समय के अली शेर श्नवाईश जैसे नामी शायरों से सम्पर्क रखता था । सांस्कृतिक जीवन की इस शाखा में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों ने सहयोग किया था। हालांकि बाबर ने संगीत के बारे में कम लिखा है हम इसका यह अर्थ नहीं लगा सकते कि भारत में संगीत की परम्परा मौजूद नहीं थी । उदाहरण के तौर पर ग्वालियर का राजा मानसिंह स्वयं कुशल संगीतज्ञ और संरक्षक था । पंद्रहवीं और सोलहवीं सदियों में प्रांतीय राज्यों के शासक संगीत के बड़े संरक्षक थे ।

हिंदुस्तान की संस्कृति का बाबर द्वारा वर्णन बहुत ही अनोखा है । वह एक कुशल योद्धा के साथ.साथए एक कविए लेखक भी था । उसमे वैज्ञानिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी था । बाबर भले ही हिन्दुस्तान में एक आक्रमणकर्ता के रूप में जाना जाता है किन्तु उसे मध्य एशिया में एक कवि के रूप में पढ़ा जाता है। बाबर ने हिन्दुस्तान के बारे में यहां के पहाड़ोंए फलोंए फूलों आदमियों का काफी सटीक वर्णन किया है । बाबर नामा न केवल आज के गजेटियर की विशेषताओं को पूरा करता है बल्किए हिन्दुस्तान के लोगों उसके आचार.विचारोंए रहन.सहन आदि के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है ।

15ण बाबरनामा ;मेमोरिज ऑफ बाबरद्धए अनु० ए० एस० बेवरीजए अटलांटिक पब्लिकेशनए भाग.1ए 1989ए पृ० 127

16ण रिज्क.उल.मुश्तकीए वाक्यात.ए.मुश्तैकीए पृ० 412

17ण सतीश चन्द्रए वहीए पृ० 276

हिंदुस्तान की संस्कृति का बाबर द्वारा वर्णन बहुत ही अनोखा है । वह एक कुशल योद्धा के साथ.साथए एक कविए लेखक भी था । उसमे वैज्ञानिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी था । बाबर भले ही हिन्दुस्तान में एक आक्रमणकर्ता के रूप में जाना जाता है किन्तु उसे मध्य एशिया में एक कवि के रूप में पढ़ा जाता है। बाबर ने हिन्दुस्तान के बारे में यहां के पहाड़ोंए फलोंए फूलों आदमियों का काफी सटीक वर्णन किया है । बाबर नामा न केवल आज के गजेटियर की विशेषताओं को पूरा करता है बल्किए हिन्दुस्तान के लोगों उसके आचार.विचारोंए रहन.सहन आदि के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देता है ।